समसामयिक भारतीय चित्रकला में मिनिएचर तत्व

डॉ० नमिता त्यागी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
ड्रॉइंग एण्ड पेंटिंग विभाग
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा
ईमेलः natyagi09@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० नमिता त्यागी

समसामयिक भारतीय चित्रकला में मिनिएचर तत्व

Artistic Narration 2022,
Vol. XIII, No. 2,
Article No. 15 pp. 98-107

https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2022-vol-xiii-no2

सारांश

कलाकृतियों में नवीनतम प्रयोगों से ही कलाकृतियाँ समकालीन होने का बोध कराती हैं। कलाकार नवीनतम आकारों का सृजन करके, उसमें आकर्षक रंगों के प्रयोग से कलाकृतियों को सृजित करता है। इस प्रकार नए आकारों के संयोजन नवीनता को दर्शते हैं। आधुनिक काल में ऐसे बहुत से कलाकार हुए जो पारम्परिक कला ऊर्जा स्त्रोत की ओर लौटना चाहते है। आज कलाकार भारतीय कला के प्रत्येक चरण से प्रभावित हो रहा है चाहे यह प्रभाव प्रागैतिहासिक, अजन्ता या लघु चित्रों का हो। प्राचीन व नवीन कला में देखने को मिलता है। प्राचीन भारतीय लघुकला अपनी सुन्दर कलाकृति व शैलीगत विशेषता के कारण विश्व में विख्यात है। राजस्थानी, मुगल व पहाड़ी शलियाँ अपनी कलात्मकता के लिए भारतीय चित्रकला के इतिहास में अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं।

लघु चित्रण की सीधी सपाट अभिव्यक्ति, एक ऐसी पारदर्शिता जिसमें रंग, रेखाएं अपने पीछे कुछ नहीं छिपातीं। इन लघु चित्रण की शक्ति ही भारतीय चित्रकला की आत्मा है। लघु चित्रण की परम्परा और सिद्धान्त प्रेम पर आधारित रहा है। कला के क्षेत्र में लघु चित्र विश्व कला की अनमोल धरोहर है।

समकालीन भारतीय कला की दुनिया में ऐसे बहुत सारे कलाकार हुए जिन्होंने मिनिएचर शैली से प्रभावित होकर अपनी कलाकृति में इन तत्वों का समावेश किया। इन कलाकारो में मंजीत बावा, सतीश गुजराल, शैल चोयल, भूपेन खक्खर, मोहन शर्मा, मोहन सामन्त, चरण शर्मा, प्रभा शाह आदि चित्रकारो ने मिनिएचर शैली की वास्तु शिल्पीय पृष्ठभूमि, रंग संयोजन आकृति रचना और उसके सौन्दर्य से सम्मोहित होकर अपनी कलाकृतियों में नए संरचनात्मक समीकरणों को व्यक्त किया है।

भारतवर्ष में समकालीन कला के विकास को किसी एक कलाकार की कलाकृतियों या किसी एक घटना से जोड़ कर नहीं देखा जा सकता। कलाकारों ने अपनी अलग–अलग कलाकृतियों, प्रयोगों और रचना क्रिया से इसे बढ़ाया है। भारतीय समकालीन कला की प्रवृत्तियों में नवीनतम दृष्टिकोण, विचारधाराएं अवधारणा स्वरूप ग्रहण करती हैं। समकालीन वर्तमान परिवेश कलाकार को हमेशा से प्रभावित करता रहा है। कलाकार अपनी कल्पना शक्ति द्वारा नवीन सोच से ऐसे आकारों की संरचना करता है जो नवीनतम का एहसास कराता है। कला पूर्ण रूप से व्यक्तिनिष्ठ होती है, कलाकार आन्तरिक शक्तियों से अन्वेषण करता है और वह अन्वेषण उस तस्वीर का महत्वपूर्ण बिन्दु होता है।

समकालीन कला आधुनिक कला को नवीनतम रूप में प्रस्तुत करने का सरल माध्यम है। वर्तमान में अतीत से बेहतर सृजन ही समकालीन कला को उद्‌बोधित करता है। आधुनिक कला से समकालीन कला को आत्मचिन्तन एवं तकनीकी अनुभवों को विकसित करने का आधार मिला। समकालीन कला का सम्बन्ध सामाजिक परिवेश से होता है, जो उसे ऊर्जा प्रदान करते हैं। कलाकृतियों में नवीनतम प्रयोगों से ही कलाकृतियाँ समकालीन होने का बोध कराती हैं। कलाकार नवीनतम आकारों का सृजन करके, उसमें आकर्षक रंगों के प्रयोग से कलाकृतियों को सृजित करता है। इस प्रकार नए आकारों के संयोजन नवीनता को दर्शाते हैं।

आधुनिक कला आज के मनुष्य की कला है, जिसमें अन्तद्वन्द है, जटिलताएं हैं, विरोधाभास है किन्तु उनके बीच एक सूत्र समान है और वह यह है कि सभी कृतियों में मनुष्य का अन्तर्गमन ही व्यंजित होता है।

समकालीन कला का प्रचार व प्रसार ने मानव जीवन, मानवीय गरिमा को अनोखा रूप प्रदान किया है। समकालीन कलाकारों के निरन्तर प्रयोगों से भारतीय कला जगत को एक नयी दिशा मिली तथा नवीन विषय वस्तु पर कार्य होने लगे। समकालीन कलकारों ने अपनी कला अभिव्यक्ति के लिए अनेक माध्यमों का प्रयोग किया है। कला में नित नवीन रूप धारण हो रहे है। कला के नवीन रूप कोलॉज, लकड़ी, थर्माकोल, फाइवर ग्लास, बॉडी आर्ट इत्यादि अनेक उदाहरण है जिनका प्रयोग हमें देखने को मिलता है।

आधुनिक काल में ऐसे बहुत से कलाकार हुए जो पारम्परिक कला ऊर्जा स्त्रोत की ओर लौटना चाहते है। आज कलाकार भारतीय कला के प्रत्येक चरण से प्रभावित हो रहा है चाहे यह प्रभाव प्रागैतिहासिक, अजन्ता या लघु चित्रों का हो, प्राचीन व नवीन कला में देखने को मिलता है।

भारतीय समसामयिक चित्रकला में मिनिएचर तत्वों की प्रधानता

प्राचीन भारतीय लघुकला अपनी सुन्दर कलाकृति व शैलीगत विशेषता के कारण विश्व में विख्यात है। राजस्थानी, मुगल व पहाड़ी शैलियाँ अपनी कलात्मकता के लिए भारतीय चित्रकला के इतिहास में अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं।

लघु चित्रण की सीधी सपाट अभिव्यक्ति, एक ऐसी पारदर्शिता जिसमें रंग, रेखाएं अपने पीछे कुछ नहीं छिपातीं। इन लघु चित्रण की शक्ति ही भारतीय चित्रकला की आत्मा है। लघु चित्रण की परम्परा और सिद्धान्त प्रेम पर आधारित रहा है। कला के क्षेत्र में लघु चित्र विश्व कला की अनमोल धरोहर है। समकालीन समय में जहाँ कलाकार नित नए प्रयोग कला के क्षेत्र में कर रहा है वहीं लघु चित्रण शैली की पारम्परिकता में आधुनिकता का समावेश कर नवीनतम रूपाकारों को सृजित कर रहा है तत्कालीन समसामयिक प्रभावों को कायम रखते हुए परम्परा की किसी शैली विशेष के प्रभाव को अपनी कला में प्रदर्शित करना इसका लक्षण है।

मिनिएचर शैली की सबसे बड़ी विशेषता उसकर द्विआयामी प्रभाव है। मिनिएचर कला द्विआयामी होने के कारण इसकी सृजनात्मकता का अभूतपर्ण विकास हुआ। इसमें तीसरे आयाम की इस खूबी से संरचना करी गयी कि कलाकार की रचनात्मकता कल्पना शक्ति की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता, उदाहरण के लिए मेवाड़ शैली के आरम्भिक लघु चित्रों में किले की चाहर दीवारी के भीतर और बाहर के दृश्यों का ही नहीं अपितु महलों के भीतर के अंतमहलों एवं उनमें हो रहे क्रियाकलापों को भी साफ दर्शाया है।

प्रारम्भिक लघु चित्रण शैली की अपभ्रंश शैली के समान समकालीन चित्रकारो ने परली आँख का चित्रण किया। अपनी कलाकृतियों में एक चश्म चेहरों का अंकन किया है जिसमें चेहरे का एक भाग ही दिखाई देता है जिसमें एक आँख, आधी नाक व आधा मुख दर्शाया गया है। कलाकारों ने मेवाड़ शली के समान क्षितिज रेखा को चित्रों में अधिक ऊपर बनाया, जिससे चित्रकार चित्रतल का आत्माभिव्यक्ति के लिए भरपूर लाभ उठा सके।

भावों को चाक्षुष रूपों में अथवा विचारों को चित्रात्मक रूपों में व्यक्त करने में रेखा की प्रथम व महत्वपूर्ण भूमिका रही है। लघु चित्रण कलाकारों ने महीन रेखाओं द्वारा आकृतियों में लयात्मकता प्रदान की है। नेत्र की बनावट में जिन महीनतम रेखाओं का प्रयोग किया है वह प्रशंसनीय है। तालाब व नदी में जल का प्रवाह दिखाने के लिए लहरदार रेखाओं का प्रयोग किया है, भवनों में भी आड़ी तिरछी रेखाओं को बड़ी बारीकी से दर्शाया गया है। संयोजन व सन्तुलन को गतिमय रेखाओं से ओर अधिक सुन्दरता प्रदान की है। इन लयपूर्ण अलंकारिक भाव प्रवण रेखाओं के माध्यम से आधुनिक कलाकारों ने भी अपनी कृतियों को सुसज्जित किया है जहां रेखाएं चित्रों के अर्थ व भावों को प्रकट करती हैं वह चित्र में रुचिपूर्ण गत्यात्मकता का भी समावेष करती हैं।

आधुनिक कलाकारों को परम्परिक मिनिएचर शैली का रंग विधान भी प्रभावित करता रहा है। कलाकारों ने कांगड़ा शैली के समान लाल, पीले, नीले आदि चटक रंगों का प्रतीकात्मक प्रयोग अपने चित्रों की रचना में किया है। इन दिआयामी प्रयोगों की रचनात्मकता समकालीन कलाकारों को भी आकर्शित करती है सपाट भूमि पर सरल संयोजन तथा रंगों के अद्भुत प्रयोगों के दृष्यात्मक भ्रम चित्र में रोचकता उत्पन्न करते हैं अनेक प्रयोगों से आधुनिक कलाकारों ने

मिनिएचर शैली के द्विआयामी प्रभाव का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। आकृति की सरलता, भाव प्रवण चक्षु, मनभावन मुद्राएं, झीने वस्त्रों का लावण्य लघु शैली के चित्रों को कोमलता तथा श्रृंगार भाव पूरित करता है, यही रचनात्मक सरलता कुछ समकालीन कलाकारों ने अपने चित्रों में प्रयुक्त कर उन्हें नवीन संयोजनो से परिभाषित किया है जो उनके चित्रों में समय काल की विशेषता को प्रकट करती हैं। इसके साथ ही हाशिए का रचनात्मक प्रयोग भी हमें समकालीन चित्रों में दिखाई देता है, जहां मोटे एवं पतले हाशिए को चित्र संयोजन के भीतर समाहित कर एक नवीन चित्र भाषा का प्रयोग दिखाई देता है। यह हाशिए लघु चित्रण की एक विशेषता रहे हैं जहां मुगल शैली में हाशिए का सुंदर प्रयोग दिखाई देता है वही मेवाड़ शैली के लाल सपाट हाशिए अपना अलग प्रभाव छोड़ते है।

समकालीन भारतीय कला की दुनिया में ऐसे बहुत सारे कलाकार हुए जिन्होंने मिनिएचर शैली से प्रभावित होकर अपनी कलाकृति में इन तत्वों का समावेश किया। इन कलाकारो में मंजीत बावा, सतीश गुजराल, शैल चोयल, भूपेन खक्खर, मोहन शर्मा, मोहन सामन्त, चरण शर्मा, प्रभा शाह आदि चित्रकारो ने मिनिएचर शैली की वास्तु शिल्पीय पृष्ठभूमि, रंग संयोजन आकृति रचना और उसके सौन्दर्य से सम्मोहित होकर अपनी कलाकृतियों में नए संरचनात्मक समीकरणों को व्यक्त किया है जिनमें से मंजीत बावा, सतीश गुजराल, शैल चोयल, भूपेन खक्खर, आदि चित्रकारों ने अपनी प्रयासों से प्राचीनतम कलाशैली पर आधारित नवीन रूपाकारों को संजोया है।

मंजीत बावा

मंजीत बावा का जन्म भारत में पंजाब के एक छोटे से गॉव धुरी में 30 जुलाई 1941 ई0 में हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि उनका जन्म गौशाला मे हुआ था। पशु प्रेम मंजीत की कला में आसानी से पहचाना जा सकता है। दिल्ली से मंजीत ने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करी। श्री अवनी सेन के सानिध्य व संरक्षण में मंजीत ने चित्रकला की अपनी समझ विकसित करी। श्री सेन के सोहबत में ही मंजीत को पशु–पक्षियों की आकृतियों को उकेरने की प्रेरणा दी।

भारत में लगभग सभी नगरों और विदेशो में लंदन, वाशिंगटन जैसे नगरों में प्रदर्शनी लगा चुके मंजीत बावा को ललित अकादमी का राष्ट्रीय सम्मान सन 1980 में मिला। सन 1986 में उन्हें पहली भारत भवन द्वैवार्षिकी का सम्मान भी मिला।

देवी, मंजीत बावा

मंजीत बावा की कृतियॉ भारतीय लघु चित्रों के शिल्प और उनके चरित्रों के सर्वाधिक निकट हैं। मंजीत की कृतियाँ पहाड़ी कलम की कांगड़ा शली के संगीतात्मक लयबद्धता प्रदर्शित करती है। इनकी अपनी ही एक

शैलीबद्धता है। इन आकृतियों के कुछ खास सन्दर्भ भी है। उनकी आकृतियाँ पौराणिक व ऐतिहासिक प्रसंगों की याद दिलाती है। उन्होंने अपने चित्रों की विषय वस्तु को प्राचीन सन्दर्भो से लेकर उसे नवीन तकनीक में प्रस्तुत किया है। मसलन कृष्ण और गायों से सम्बन्धित उनके चित्रों को ही लें इनमें गायों से घिरे कृष्ण ही है किन्तु मंजीत गायों और कृष्ण को किसी विशेष पहर में ही नहीं रखते, सुबह, दोपहर या गोधूली की बेला में इन्हें नहीं चित्रित करते, यहाँ प्रमुख प्रमुख है तो रंग और मुद्राएँ।

मंजीत बावा ने अपने चित्रों में लघु चित्रण की राजस्थानी, पहाड़ी शैली के समान कल्पनायुक्त चित्रण किया। चित्रों में द्विआयामी प्रभाव नजर आता है। वह चित्र आकृतियों को अन्तराल में बनाते हैं।

मंजीत की कलाकृति में जहाँ अर्थ की लय है, वहीं संगीत की मुधरता भी। यही कारण है कि भारतीय मिनिएचर की परम्परा को समकालीन सन्दर्भ देने वाले कलाकारों में उन्हें अग्रणी माना जाता है।

उनकी कृतियां जिनमें चित्र श्रंखला भाव, कृष्णा ईटिंग फायर, सोहनी, काली देवी तथा कृष्ण और गाय के अनेकानेक चित्रों में हमें लघु चित्रों की रंग योजना और भूमि का सपाटपन प्रदर्षित होता है जिनको उन्होंने अपनी दक्षता से आधुनिक कला परिवेश में पिरोया है। सन् 2005 में मंजीत के मस्तिष्क में आघात लगने से वह कौमा में चले गए और 28 दिसम्बर 2008 को उन्होंने अपने जीवन की अन्तिम सांसे ली।

सतीश गुजराल

आधुनिक भारतीय कला में सतीश गुजराल अनोखी प्रतिभा के कारण विख्यात है। उन्हें बहुमुखी प्रतिभा का धनी कहना शायद काफी नहीं है, वह समग्र कलाकार हैं–टोटल आर्टिस्ट। पेन्टिंग, मूर्तिशिल्प, सिरेमिक्स, म्यूरल, कोलाज, स्थापत्य सभी विधाओं में उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया है।

सतीश गुजराल का जन्म 1925 ई में झेलम में हुआ था। वह एक राजनीतिक परिवार में पैदा हुए थे। तेरह साल की उम्र में सतीश गुजराल के मेयो स्कूल ऑफ आर्ट में प्रवेश लिया। मेयो स्कूल के पाँच साल तक सतीश गुजराल ने ग्राफिक्स कला का अध्ययन किया। बाद के मुम्बई के प्रसिद्ध जे0 जे0 स्कूल ऑफ आर्ट में उन्होंने पेन्टिंग के अध्ययन के लिए दाखिला लिया। उनके चित्रों में पहली एकल प्रदर्शनी आयोजित हुई।

सोहनी महिवाल, सतीश गुजराल

उन दिनों डॉ0 फाबरी अपनी टिप्पणी में किसी का नाम भी गिना देते थे तो उनकी प्रतिष्ठा बढ़ जाती

थी। डॉ0 फाबरी आसानी से अपने कॉलम में किसी कलाकार को 'जीनियस' नहीं घोषित कर देते थे पर सतीश गुजराल को उन्होंने 'जीनियस' बताया।

सतीश गुजराल की कला के अनेक स्त्रोत हैं। उनकी इस बात में दम है कि हम प्रकृति से अधिक कला से सीखते हैं। लोक कला, आदिम कला, यूरोपियन रेनेसां, आधुनिक कला सभी से गुजराल ने सीख ली है। सतीश गुजराल के चित्रों में हमें मिनिएचर शैली का भी प्रभाव नजर आता है। उन्होने मिनिएचर शैली से प्रभावित होकर चित्रों को कई भागों में बॉटकर बनाया है। चित्र में आकृतियों, एक चश्म चेहरों का अंकन, बादलों, पेड़ों को मिनिएचर शैली के समान अलंकारिक ढंग से चित्रित किया है। लाल, पीले, नीले, भूरे, काले रंगो का प्रयोग तथा वस्त्रों की पारदर्शिता व वस्त्रों के किनारों पर हल्की–हल्की छाया को प्रदर्शित किया है। शतरंज के खिलाड़ी, देहली ईयर, सेलिब्रेशन, मीराबाई, सोहनी महिवाल आदि उनके चित्रों में आकृतियों की भाव भंगिमाए, मुद्राएं, एक चश्म चेहरे, प्रकृति, पशु पक्षी इन सभी में लघु चित्रों की लय बद्धता प्रदर्षित होती है। आधुनिक भारतीय चित्रकला में सतीश गुजराल अग्रणी कलाकार है उन्होंने भारतीय चित्रकला को आधुनिकता में ढालकर नवीन रूप प्रदान किया।

शैल चोयल

आधुनिक जगत में शैल चोयल एक ऐसे कलाकार हुए जिन्होंने मिनिएचर शैली को अपने चित्रों का आधार मानकर चित्रण कार्य किया। शैल चोयल का जन्म 09 नवम्बर 1945 ई0 में कोटा में हुआ था।

उन्होंने उदयपुर विद्यालय से सन 1969 में चित्रकला में एम0 ए0 की डिग्री प्राप्त की। सन 1975–1976 में स्लेड कोलेज लंदन में प्रिन्टमेंकिंग का अध्ययन किया है स्वदेश लौटने पर मेरठ यूनिवर्सिटी के साथ चित्रकला पर शिक्षण कार्य किया। परमानन्द चोयल जी के मित्र के0के0 हेब्बार थे। एक बार वह उदयपुर आए थे राजस्थानी कला की लघु चित्र शैली से शैल का परिचय कराया। उसके पश्चात् शैल चोयल मिनिएचर करने में मग्न हो गए।

नीला घोडा, शैल चोयल

शैल चोयल ने अपनी कला यात्रा समय के अनुसार आगे बढ़ाते हुए भिन्न–भिन्न विचारों, शैलियों को सम्मिश्रण करते हुए राजस्थानी शैली को एक नवीन रूप में प्रस्तुत किया। जो प्राचीन मिनिएचर तत्वों के साथ आधुनिक तकनीक लिए है। शैल चोयल जी को अखिल भारतीय कालिदास प्रदर्शनी से पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन 1972 में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा चित्रकला में पुरस्कार सन 1973 में बाम्बे आर्ट सोसायटी से चित्रकला में पुरस्कार, सन 1981 में फाइन आर्ट अकादमी, अमृतसर द्वारा चित्रकला के लिए पुरस्कार प्राप्त हुआ। शैल चोयल के

आरम्भिक कार्यो में यूरोपियन प्रभाव परिलक्षित होता है, परन्तु जल्द ही उन्होंने इसका परित्याग कर दिया और अपने चित्रों में नवीन प्रयोग से चित्रों की रचना करी। शैल चोयल के चित्रों में काव्यात्मक संवेदशीलता संगीतात्मक विशेषता को अपनी कल्पना के साथ जोड़ा है। शैल चोयल का संयोजन दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। शैल ने प्रारम्भिक राजस्थानी कृतियों के कामोत्तेजक मनोभावों को समकालीनता के साथ अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए चित्रित किया है।

उन्होंने पारम्परिक मिनिएचर कला शैली को अपनी कल्पना एवं नवीन विचारों के द्वारा मिनिएचर को पुनः यौवन का स्वरूप प्रदान किया है। जिसमें द्विआयामी व त्रिआयामी प्रभाव को दर्शाया है। चित्र में संयोजन व स्पेस का बहुत ध्यान रखा है। कृष्ण को समय के अनुसार सामान्य आकार में ही नहीं बल्कि लम्बे आकार में भी चित्रित किया है व आकृतियों को किन्नर रूप में भी दर्शाया है जो कलाकार की कल्पना शक्ति को दर्शाता है। अपने चित्रों के द्वारा प्राचीनतम व नवीन शैली का मिश्रण करके कला जगत में अपनी एक विशेष पहचान बनायी है, जिसके लिए कला जगत हमेशा उनका आभारी रहेगा।

चित्र नीला घोडा, कमल कुंड, गाडस इन द गार्डन में प्राचीन मिनिएचर शैली से प्रभावित विषय वस्तु के अतिरिक्त संयोजनो में कमल युक्त सरोवर, एक चश्म मुद्रा एवं पृष्ठभूमि का विवरण भी मिनिएचर शैली के सामान किया है। चित्र रंगीलो जोबन, कृष्णा मैलोडी, में लाल रंग के सपाट धरातल, केले के वृक्षों का अंकन, महल को सफेद तथा क्षितिज रेखा को अधिक ऊँचाई पर बनाना लघु चित्रण से प्रेरित है। द्विआयामी प्रभाव को भी दर्शाया है। चित्रों को कलाकार ने श्रंगार रस से परिपूर्ण बनाया है। चित्र की कल्पनाशीलता, नायिका, अन्तराल विभाजन, कार्य शैली, रंग संयोजन लघु चित्रण से पूर्ण प्रेरित है जो चित्र को एक मनमोहक स्वरूप प्रदान करती है।

भूपेन खक्खर

भूपेन खक्खर एक ऐसे प्रतिभाशाली कलाकार थे जिन्होने समकालीन जीवन से सम्बन्धित विषयों को अपने चित्रों में शामिल किया। भूपेन खक्खर का जन्म पंजाब में 1934 ई में हुआ था। वह मध्यवर्गीय परिवार से थे तथा पढ़ाई में बहुत अच्छे थे। उन्हें लेखन कला में भी रूचि थी। वह लम्बे समय तक यह निर्णय नहीं कर पाए थे कि उन्हे चित्रकला में रहना है अथवा लेखन मे। उन्होंने 1963–1964 ई0 में चित्र रचना शुरू करी, जब बम्बई के जे0जे0 कालेज की सांध्य कक्षाओं में उन्होंने जाना शुरू किया। वहॉ उन्होने कुछ रेखा चित्र बनाए, उनके रेखांकन को देखकर गुलाम शेख ने बड़ौदा आने का निमंत्रण दिया, जहॉ वह एक कलाकार थे। भूपेन खक्खर ने बड़ौदा में केवल कला इतिहास की शिक्षा पायी थी।

भूपेन ने मुम्बई में 1969 में अपनी पहली एकल प्रदर्शनी की। इसके पश्चात् मुम्बई, दिल्ली, लंदन वाशिंगटन, पेरिस आदि में उनका काम दिखाया गया। जर्मनी, जापान, इटली और

स्पेन जैसे देशों में भी उनकी प्रदर्शनियॉ हुई। दिल्ली के आधुनिक राष्ट्रीय कला संग्राहलय से लेकर न्यूयार्क के म्यूजियम ऑफ मॉडन आर्ट में भी उनका एक चित्र है। मध्य प्रदेश शासन के कालिदास सम्मान और सन् 1984 में पदम श्री से सम्मानित किए। 8 अगस्त 2003 को प्रतिभाशाली कलाकार भूपेन खक्खर का देहवसान हो गया तथा वह कला जगत में अपनी कलाकृतियों के द्वारा हमेशा के लिए अमर हो गए।

यज्ञ और मैरिज, भूपेन खक्खर

भूपेन ने लोकप्रिय केलेण्डर छवियों, पोस्टरों, पिक्चर, पोस्टकार्ड़ो, साइनबोर्डो और ऐसी बहुतेरी चित्र सामग्री के साथ अपनी कला का रिशता जोड़ा। इसके अलावा ब्रिटिश पॉप आर्ट, जैन पोथी चित्र और मिनिएचर चित्रों के गठजोड़ से भी उन्होने अपनी कला को नए अर्थ और आयाम दिये। भूपेन खक्खर ने शहरी जीवन में पढ़ो लिखे वर्ग का बड़ी सुन्दरता से चित्रों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने घरों बाजारों की अत्यन्त साधरण, सरल छवियों को अपनी चित्रों का विशय बनाया। भूपेन के बहुतेरे चित्र हमें सहज ही कस्बों–शहरों की उन गलियों की याद दिलोते हैं जहॉ गलियों में एक अलसाया सा समय पसरा रहता है। लोग जिस सीमित स्पेस में घरों बाजारों में रहते है उस स्पेस पर भी मानो भूपेन ने बहुत कुछ सोचा विचारा है।

मिनिएचर चित्रो की शैली में आंके गए श्हरों, कस्बों के घरों के भीतर के दृश्य भूपेन की कला के उत्कृष्ट उदाहरण है। तैल रंगों, एक्रिलिक रंगों के अतिरिक्त पैस्टल और जलरंगों के भी उन्होने काम किया है। भूपेन खक्खर ने भारतीय कला से प्रभावित होकर अपने चित्रों में भवनों और पेड़ों के रंग संयोजन, डिजाइन तत्व को मिनिएचर शैली में बनाया है। उनके चित्रों में भवन ऐसे प्रतीत होते है मानों ऊपर से बैठकर देख रहे हों। भूपेन खक्खर की पेन्टिंग में मोटरों, बसों, शहरी इमारतों, सड़कों, बिजली के खम्बों का सरलीकरण दिखाया है। वे विषय के अनुसार चित्र की रंग योजना व फलक विभाजन का कार्य करते है।

चित्र फैक्ट्री स्ट्राइक, डेथ इन फैमिली, एस्केप इन टूलाइफ, यज्ञ और मैरिज में सूक्ष्म अंकन, रंग संयोजन, भवन निर्माण, अन्तराल योजना मिनिएचर शैली से प्रभावित है। चित्रों की पृष्ठभूमि में मिनिएचर शैली के सामान भवनों के आन्तरिक दृश्यों में होने वाले विभिन्न क्रिया कलापों को चित्रित किया गया है। पेड़ों का अंकन, चित्र संयोजन लघु शैली से प्रभावित है। चित्र में संयोजन मिनिएचर शैली से प्रभावित है। चित्र में क्षितिज रेखा को ऊॅचाई पर बनाया है तथा द्विआयामी स्वरूप को प्रस्तुत किया है।

समकालीन आधुनिक समय में कला के नवीन स्वरूप हमारे सामने आ रहे है। कलाकार विभिन्न स्त्रोत से प्रेरणा लेकर अपनी कल्पना के द्वारा नवीन स्वरूपों को सृजित कर रहे हैं।

समकालीन आधुनिक कलाकारों के विचारों से आकार तथा रंगो में भाव का गुण व तत्व का रूप छिपा है जो शुद्ध अमूर्त पद्धतियों में चित्रित किया गया है। समकालीन कला के क्षेत्र में असाधारण रूप में विविध वादों और आयामों का प्रादुर्भाव हो चुका है। वे सभी हमारे समय की देन है। समकालीन कलाकार विषय वस्तु व कला तत्वों के लिए परम्परा की ओर उन्मुख है। आधुनिक युग के प्राचीनतम कला एक नवीन रूप में हमारे समक्ष आयी है। कलाकारो ने लघु चित्रण के द्वारा विभिन्न प्रयोगों से कला जगत में एक नवीन आधारशिला रखी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कक्कड़, कृष्ण नारायण. (1980). स्मकालीन कला सन्दर्भ–तथा स्थिति. आर0एल0 बार्थोलोम्यु. सचिव ललित कला अकादमीः नई दिल्ली।
2. गैरोला, वाचस्पति. (1963). भारतीय चित्रकला. मित्र प्रकाश्नः प्राइवेट लिमिटेड।
3. द्ववेदी, प्रेमशंकर. (2007). भारतीय चित्रकला के विभिन्न आयाम. कला प्रकाशनः न्यू साकेत कालौनी, वाराणसी।
4. भारद्वाज, विनोद. (2006). वृहद आधुनिक कला कोश. वाणी प्रकाशनः दरियागंज, नई दिल्ली।
5. भटनागर, आर के. (1986). स्मकालीन कला. ललित कला अकादमीः नई दिल्ली. 6 मई।

Bibiligraphy

1. Chaitanya, Krishna. (1994). A History of Indian Painting. The Modern Period. By Shakti Malik. Abinav Publications: New Delhi.
2. Dalima, Yashodhara. (2001). The Making of Modern Indian Art OXFORD Press: New Delhi.
3. Tuli, Neveille. The Flamed, Mosaic Indian Contemporary Painting. In Association with Mapin Pulishing Pvt. Ltd.

पत्रिकांए

1. मिश्र, डॉ0 अवधेश. (2012). कला दीर्घा. दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका. अप्रैल अंक 12.
2. जोशी, ज्योतिष. (2001). समकालीन कला. ललित कला अकादमीः नई दिल्ली. जून अंक 19.

Websites

1. www.Dhoomimalcitygallery.com/test/shailchoyal.html.
2. eh.Wikipedia,org/wiki/Bhupen Khakhar.

Maxzines

1. Lalit Kala Contemporary 10. Jaya Apparamy. published by the Secretary Lalit Kala Akademi: New Delhi.
2. Lalit Kala Contemporary 3. Jaya Apparamy. published by the Secretary Lalit Kala Akademi: New Delhi.
3. Lalit Kala Contemporary 17. Jaya Apparamy. published by the Secretary Lalit Kala Akademi: New Delhi.